'सुदामा चरित'

(तिरहुत भाषा लिख्यते)

दोहा

श्रीपति पद सिरनाय, मंगल मुद दारिद हरन।
गणपति चरण मनाय, चरित सुदामा कहिय किछु ॥

चौपाइ

विप्र सुदामा दीनक मूल,
हरि परिचर्या मध अनुकूल।
पंडित विद्यावन्त सुजान,
तत्पर पूजा पाठ पुरान ॥
जौं दरिद्र तौं मन नहि छोट,
चितनहि परिधन देखने खोट।
नहि किछु विभव ने खेत पथार,
नहि गृहि किच्छु जथा परकार ॥
तद्यपि राखु ने ककरो आस,
भक्ति पच्छ मे हृदय हुलास।
कहुखन भिच्छा माँगे जाथि,
ताही मे दुख वेकसी खाथि ॥
नहि तौं फल मूल करथि अहार,

नहि किछु करथि वृत्ति व्यवहार।
कय दिन साग अनोने मास।
कय दिन सुखले परथि उपास॥
काठ कमण्डल सेहो पुरान,
विप्र दीनता के नहि ज्ञान।
डांड़ डराडोरि मूजक जौरि,
नव वस्त्र केर दाम ने कौड़ि॥
जीर्ण वसन फाटल कय ठाम,
किछु उपाय नहि रामक नाम॥
घरक चार पर खढ़क ने बाट,
टुटल मड़ैआ टुटले टाट॥
मित्र बन्धु परिवार निहारि,
कथो लय करताह खोज पुछारि॥
जाहि सरोवर नीर सुखाय,
पंछी कोन ताहि ठाम जाय॥

दोहा

पथिको पतझर तरुक र र, नहि बैसथि नहि जाथि।
तहिना पाहुन घरक कियो, द्विज घर देखि पड़ाथि॥

सोरठा

जहाँ ने बरिसय मेघ, तहाँ की उपजा होय शशि।
बिनु उद्यम बिनु मेघ, बोझ भरे की होय थित॥

चौपाइ

सुकी सुवाम सुदामा नारि,
असन वसन बिनु मलिन दुखारि।
तौं पातिव्रत धर्महि लीन,
पति सेवा मे परम प्रवीण॥
स्वामि उच्छिष्ट मुदित मन खाथि,
दासी भेलि रहथि दिनराति।
महाप्रेम दिय अचिन सुकीय,
विष्णु जेना लक्ष्मी कौं प्रीय॥
गोपीजन कौं जेना गोपाल,
श्रीनन्द नन्दन कृष्ण कृपाल।
श्री गौरी कौं शंकर वाम,
श्री सीता कौं जहिना राम॥
जेना सची कौं प्रीय पति इन्द्र,
श्री रोहिन कौं जहिना चन्द्र।
जेना स्वहा कौं अग्नि पोआर,
तनुवत सुकीक धर्म वेवहार॥
अर्थ बिना सब दुर्दश गात,
जल बिनु जेना पुरैनी पात।
धर्मरता निय सुकखक हीन,
दिनुक चन्द्रमा जेना मलीन॥
फेरब बिना जेना सुख पान,

रौदिक मारल जहिना धान।
गहना गिरह ने एको थीक,
पहिरन वस्त्र पुरान अधिक॥
तेल बिना करसी उड़ माथ,
छुच्छे गर छुच्छे जुग हाथ।
छुच्छे नाक कान सभ अंग,
काजर बिना नैन बदरंग॥
कोन धराना दिनता दुरै,
ब्राह्मण कों से नहि किछु फुरै।

दोहा

एहन दशा सौं काटु तिय, दिवा राति निज धाम।
ककरहु सों नहि कामना, जपहि राम केर नाम॥

सोरठा

जौं जौं दिनता बाढ़, तौं तौं धक मन धैरजता।
तन मन सों दृढ़गाढ़, जपहि निरन्तर हरिसरन।

कवित्त

जौं सुदामा नारि सुकी अन वस्त्र बिनु दुखी।
तौं पति सेवा मे सुखी प्रफुलित रह चित।
स्वामि के करथि सोंछा को हैत कनिक चिन्ता।
हमरा रहैछ इंछा होअै किछु धन वित।
अहीं तौं जनैछी प्रिय संसार सुभाव तिय

बनल रहैए छिथ धन इंछा नित निथ।
धनही सौं हो सन्तोष आदर करऐ लोक
कटए विपति सोक जगत्र बढ़ऐ थिव।

चौपाइ

कतहु करहु थिय जाचन जाए,
घर बैसने नहि हैत उपाए।
अहाँक छाड़ि ककरा हम कहब,
कतेक दिवस दुख दुर्गति सहब॥
उद्यम कए किछु [illegible] की नृप भेंट,
जाहि सौं अन्न खाइ भरि पेट।
हाथ पैर नासा दृग कान,
देने छथि सभटा भगवान॥
विद्यावान सुपंडित छी,
विप्र सभा मध मंडित छी।
चारू वर्ण राखि निज धर्म,
सकल करए संसारी कर्म।
सेवल चित्त धरई नहि छी,
किए उपाए करइ नहि छी।
जनितहि छी जग केर व्यवहार,
बिनु उद्यम नहि मिलहि अहार।
गृह कुल धर्म धरौने छी,

लखन किया अनठीने छी।
पढ़ने मन जों पहिनहि छल,
तँइखन जैतहु वनमे चल॥
आय लगबितहु ध्यान समाधि,
कथि लए सहितहु बोद्ध उपाधि।
से तेजि घर रहि कैल बिवाह,
गृहपति भेलहु नारि केर नाह॥
करँ परत से अवसि उपाए,
जाहिसों दुर्ग दरिद्रा जाए।
सकल कहैअछि उद्यम हीन,
विप्र सुदामा हीन मलीन॥
बिनु उपाय घर बैसल रहु,
तकरा सभ केओ अहदी कहु।

दोहा

एहि विधि सुकी बुझाएकै, बहु प्रकार कहु बैन।
ताहि समय चित्त थिर ने रहु, दरै लागु द्रग नैन।

सोरठा

जेना हयत आनन्द, से उपाय एक जानु तिया।
के काटत ई फन्द, बिनु नन्द नन्दन सावरो।

कवित्त

सुनिवहि नारि बैन, विप्र ने रहल चैन।

नीर ढरि आब नैन, किछु ने कहल जाय।
कहु पुनः सुनु बाम, आचन उदाम काम
लकर लइत नाम, थिर ने रहल जाए।
मांगि भिक्षा नित्यखायल, ककरो ने आस धैल
जाचं ने कहियो कैल, नृपति महल जाए।
पूजा व्रत धर्म छाड़ि, बचन मानिकै नारि
कृषी कर्म खेत बाड़ी, के करत टहल जाए॥

चौपाइ

जखन नहि हम नृपति दुआर,
करे ने अबइछ किछु व्यापार।
पूजा पाठ छाड़ि निज धर्म,
ई सभ थीक पुरोहित कर्म॥
कृषी कर्म सों शूद्र कहायब,
विषय वासना मेल पटायब।
हमरा से सभ नहि अछि लूरि,
धन अभिलाष करु तिय दूरि॥
क्रिया विहून विप्र अति भ्रष्ट,
कायर हो छत्री सो नष्ट।
राजा नष्ट न्याय विहीन,
मंत्री नष्ट जे विद्या हीन॥
धाम नष्ट जहाँ नहि रहु बाम,
गृहि बिनु गरुआई नोःकाम।

धिक कुल नारि अभय निर्लज्ज,
वेश्या वृथा जे होय सलज्ज ॥
अहित समाज कुटिल गति मीत,
दान बिना आदर अनुचित ।
जल बिनु सरिता कूप तड़ाग,
फूल बिनु वृथा वृक्ष वन बाग ॥
रात्रि वृथा धिक चन्द्र विहीन,
वन्ध्या नारि अशुभ सभ दीन ।
वृथा क्रिया बिनु धर्म 'विचार,
बिनु हरि भजन जन्म धिक्कार ॥
तैं अछि हमरा एतेक सिधान्त,
भक्ति पन्थ मन रहए एकान्त ।
धनबल गर्व विषय कह बास,
धनबल वेश्या संग बिलास ॥
राज छाड़ि ध्रुव गेलाह पराए,
सम्पत्ति भेने धर्म हराए ।

दोहा

धनबल किया प्रसंसु तिय, धन सौं बाढ़ घमण्ड ।
मन चंचल नहि थिर रहे, धन मद परम प्रचण्ड ॥

सोरठा

कहूँ बढ़ावे राढ़ि, ककरहु सौं हो शत्रुता ॥
चोरक डर रह बाढ़ि, जकरा गृहमे धन रहे ।

चौपाइ

हे प्रिय निन्दा धन नहि करिअ ।
सभ प्रकार सर्वस बल धरिअ ॥
निर्धन पुरुष धर्म की करत ।
अपनहि जे खयबा बिनु मरत ॥
सकल हेतु धिक धनक प्रयोजन ।
नित्य कराविअ ब्राह्मण भोजन ॥
दीन दुखी कौं सौंपिअ दानहि ।
हित कुटुम्ब परिजन सनमानहि ॥
जहँ तहँ पोखरि कूप खुनाबिय ।
महल धवल वन बाग लगाबिय ॥
यज्ञ करिय विप्रादिक हेतु ।
धन थिक भवसागर केर सेतु ॥
ज्ञानवान जनकौं हो सम्पत्ति ।
तनिहुका सौं यमराजो काँपथि ॥
अज्ञानी जन सर्वस पाय ।
ज्ञान बिना से पाप कमाय ॥
अह अपनहि छी पुरुष सुजान ।
धन भेने नहि होयत गुमान ॥
दान करब कत तीरथ जायब ।
नित - नित नूतन पुण्य कमायब ॥

सत्य कहो इ नारि सोहागिन ।
हमरा घर रहि भेलहु अभागिन ॥
हम तौं जगतक दीन भिखारि ।
से दुख दोसर के देत टारि ॥
जाहि उपायें पाबिअ सर्बस ।
अपनहिं कहु बिचारु से यश ॥
जाहि सौं अपनो बाँचय धर्म्म ।
सत्य रहए कुल विप्रक कर्म्म ।

दोहा

ई सभ ज्ञान जे भाषु प्रिय, सत्य धर्म सन्तोष ।
सौं ब्राह्मण कों जाचना, शास्त्र वर्जित नहि दोष ।

सोरठा

अपनहिं श्री भगवान, भवने छथि बलिराज कें ।
विश्वामित्र सुजान, दान लेल हरिचन्द्र सौं ।

छप्पय

द्वारावति मे कृष्ण राए केर बनिक बसल अछि ।
सभ राजा केर महाराज सिरवंत सुनल अछि ।
अहाँ कहल एक दिवस कृष्णसों मित्र भाव अछि ।
तें द्वारावति जाइ मित्रकर मन सुभाव अछि ।
सुनु प्रिय नूतन एक उपाय हमरा इ सुझल अछि ।
हुनकहि जाचिय जाय दोसर ने उपाय सुझल अछि

चौपाइ

कृष्णक हाल सुनल नहि नारी ।
साथ धुनै अछि द्विजक गोआरी ॥
जसुमति नन्दक पुत्र कहौलन्हि ।
दुनू गोटे तकरो फल पौलन्हि ॥
पालल कोमल निज सुत जानि ।
दूध पियाय यशोमति रानि ।
ग्वाल गोप कय जानल जेठा ।
अन्त कहौलन्हि देवकीक बेटा ॥
स्वामी कय जानल सभ गोपी ।
तन मन धन जीवन देल सोंपी ॥
तनिकहु तेजलन्हि है कोन नीती ।
जोड़लन्हि कुबरी संग पिरीती ॥
सैह बुझू प्रिय ! मनहि विचारि ।
कुबरी कहिया भेलन्हि पनिहारि ॥
तकरा कयल सोहागिनि श्याम ।
एहन करत के दोसर काम ॥
जौं यशोमति लग कृष्ण सुतैतथि ।
तौं देवकि बन्धहिं रहि जैतथि ॥
षट दस सहस राजकुल कन्या ।
मन लागल छल हरि पर धन्या ॥

जौँ नहि नेजितथि मजकुल नारि।
तौँ हुनका के लेत उबारि।।
रहितथि जौँ चरबैते गाय।
कंसकनाश के करितय जाय।।

सुदामा वाक्य

सकरा हमहु उछेद नै करिय।
एक बिचार हृदय महँ गुनिय।।
गुरुहिक भवन चिन्हारय भेल।
सकरा बहुत दिवस बिति गेल।।
आब भेला राजा महराज।
मित्र कहैत हेतन्हि बड़ लाज।

सुकीवाक्य

दोहा

पढ़ुन कथा ततु भालु रिय, ओ छथि परम दयाल।
के सरनागत गेल अछि, सब विधि भेल नेहाल

सोरठा

भाव-वश्य भगवान, जाहि भाव सौँ अपदि जे
जानथि कृपानिधान, जकरा मन जें कामना।

सुदामा-वाक्य

चौपाइ

हम बुझैं छी ई सब ताल।
बिनु नाते नहि डरथि गोपाल।।
द्वारपाल छल हाथी गोही।
ताहि उधार कयल झट ओही।।
बन्धुवधू द्रौपदिक सुनि टेरि।
आबि वसन सँ कयलन्हि ढेरि।।
छल दशरथ केर मित्र जटाय।
अग्नि श्राद्ध तेँ कयलन्हि जाय।।
सीय उधार सुग्रीव सकारल।
तेँ श्रीराम बालिकेँ मारल।।
लंकाक भेद विभीषण भाखु।
तेँ हुनकहु सरनागत राखु।
जोँ अछि हिनके लिखल कपार।
से दुख के अछि मेटनिहार।।

सुकी वाक्य

नाता जौँ गज-ग्राहक संग।
दुहु पर कृपा होइत एक रंग।।
बली जानि प्रभु मारहि मारी।
हाथी कौँ धरि लेलन्हि सवारी।।

भीष्म द्रोण सम सभा विराजू ।
द्रौपदी नग्न समय नहि बाजू ॥
केवल श्रीहरि शरण पुकारी ।
तेँ द्रौपदी नहि भेली उघारी ॥
दीन जानि गिधराजहि राम ।
प्रेम जानि देलन्हि निज धाम ॥
सरन जानि सुग्रीव अधीर ।
तेँ बालिक पर मारल तीर ॥
कहल विभीषण हित बुध भ्रातहि ।
से रावन मारल उठि लातहि ।
तेँ हरि शरण विभीषण धैल ।
प्रभु द्वारा रावन वध कयल ॥

दोहा

नाता नहि मानल प्रभु, केवल प्रेम अधीन ।
सरनागत पालक थिका, जानिअ विप्र प्रवीन ॥

सोरठा

संतहि प्रीतम नाथ, दुष्टक नाशेँ रिपु प्रबल ।
सभकिछु हुनकहि हाथ, जाय द्वारिका सरन लिअ ॥

कवित्त

जानु प्रिया प्रेम नाते ध्रुव प्रह्लाद और,
निषादादि नीच जानि गृद्ध उधारीय देल ।
गणिका अजामिलादि इत्यादि अनेक पापी,
नाम सुमिरन बल तुरत तारिये देल ।
रिपु नातेँ दशकानन कंस जरासंध-आदि,
शिशुपाल दुर्योधन दुष्ट के मारिय देल ।
महाबली हिरनकसिपु नामी राक्षस केँ,
क्रोधेँ धरि जाँघ पर पेट कय फारिय देल ॥

दोसर—कवित्त

विभीषण सुग्रीवक हीनता केँ जानु प्रिया
भेजा ई नृपति वर श्रीराम सरन थल ।
आगि मे सलिल मे पड़ने के ने जरैय मरैय
प्रह्लाद केँ से भेल जे अंक मे लिखल छल ॥
कृपासिन्धु मदन प्रतापेँ से मेटाय गेल
आश्चर्य मानल दुष्ट हिरनकसिपु खल ।
आगु पाछु जनु कछु द्वारकाक पथ चलू
अवश्य कुअंक भाल मेटाय आयत चल ।

छप्पय

जो गजरथ पर चढ़ि निहारि हम दीन भिखारी
बैसथि सिंघासनहि दुर्ग बिच महल अटारी ।
गज घोड़ा केर ठाठ हाथि चित्रकार करथि सभ ।
अनुचर गण चहुओर जोर अधिकार करहि सभ ।
ने घर छाड़ि ने ग्राम तेजि दूरि देस कहियो गेलहुँ,
जाचको दानक हेतु प्रिया ने ककरो हम वशि गेलहुँ ।

सवैया

जाय कय हम कोहि ठाम ककर लेब नाम कहब की,
पौरोगन देखि काय,देत धकिआय मरब की ।
कटुक कहत करि रोष सहब से दोष करब की,
कि देखि गोमता घाट परक फेरि बाट धरब की ।

सुकी वाक्य

छप्पय

जौं गजरथ पर चढ़निहार श्री कृपा दयानिधि ।
तौं गज शब्द सुनैत पदेरहि धाय कोन विधि ।
सुनि द्रौपदी कर टेर दरिलय वसन, चोर चर ।
द्रोय ने देलन्हि उबारि शत्रुरह हारि मोड़ि कर ।
हुनका लग दानक अधिक आदर हो धनवन्त सों ।
जयते करू झट द्वारिका सत्य कहि हम कन्त सों ।

चौपाइ

गुरू समीप केर थिका चिन्हार ।
लखन एतेक को करिय विचार ॥
एहुना ठाम किये नहि जायब ।
जें नहि मन वांछित फल पायब ॥
कोनहु ठाम कतहु जों जायब ।
फल सें अपन कपारे पायब ॥

जों ई वचन कयल परमान ।
द्वारावती करब प्रस्थान ॥
किछु संदेश भेंट प्रभु लाय ।
आनि दिअ कय जतन उपाय ॥
ओसर जानि आगु मे धरब ।
बिनती विनय सुदाम करब ॥
हुनका नहि सन्देसक काज ।
ओ अपने दानी महराज ॥
छाड़ि दिअ सन्देशक चर्च ।
जुरइछ नहि किछु घाटक खर्च ॥
धानन हाथ मिलजि लय कुवरी ।
मलजि बैर लय भिलनी सबरी ॥
जों गज छल जल बुड़ल समूल ।
तौं एक तोड़ि चढ़ौलक फूल ॥
सुनि कय सुदामा वचन सयानी ।
पावेक जउ फकही देल आनी ॥
आँचर फाड़ि बान्हि से देल ।
अट्टहास हँसि ब्राह्मण लेल ॥
मेवा मधुर देखि नृप जन्हिका ।
कोना देब जत फकही तन्हिका ॥
हमरहि तौं देखि होइछ लाज ।
तकरा कोना लेताह ब्रजराज ॥

सोरठा

एहि विपत्ति हम जानि, नृप याचन छोड़ने छलहुँ ।
कहल नारि केर मानि, परलहु विपदा फन्दमे ॥

चौपाइ

चहु दिस देखिय नृपगण भीर ।
हाथी घोड़ाक झुंड गंभीर ॥
देवगण आयथि दर्शन हेतु ।
नारदादि मुनि श्री वृषकेतु ॥
गगन महल धरि बड़इछ धोज ।
सुनल ने जाइछ ककरो बोल ॥
मल्ल युद्ध होइछ कय ठाम ।
डर लगैए से सुनितहि नाम ॥
कय ठाम सीकर बान्हल बाघ ।
देखी नहि फटिकहि डर लाग ॥
बिनु आदेश जे भीतर जाय ।
रछक सों गरदनियाँ खाय ॥
बड़ आश्चर्य त्रिया फेर बात ।
एहना सों कहु मिश्रक नात ॥
हम भिछुक ई नृपति नरेश ।
ताहू पर देल कहहि सन्देश ॥
के अछि पहन जगत कोन ठाम ।
ककही लेत देत धन धाम ॥

जनलहु सहजहि भेंट मुरारीक ।
मानल तेँ हम कहिनी नारिक ॥
आब बुझल निज हिरियाक रीति ।
धनहित त्यागल नाह पीरीत ॥
तेँ औ कयल एहन उपदेश ।
की करब नभ करो परवेश ॥
जों कदापि भेटो धरि भेल ।
तों एखा फेर फल भेटि गेल ॥
जौं किछु पुछताह एको बेरी ।
परिचय कहब करब नहि देरी ॥

दोहा

केओ ने साथी संग थीक नहि उपकारी होत ।
से जौं सोचब तौं रहब, बैसल गबइत गीत ॥

सोरठा

जँ घर जायब घूरि, हरूक कय त्रिया बुझती ।
एलहुँ एतेक दूरि, पछतायब फिरने बहुत ॥

छप्पय

सबंस बिनु श्रम पाय राजगृह सों नहि लाविय
बिनु बुड़ने ने समुद्रमध्य मुक्तामनि पाविय
बिनु हरि भक्ति ने पाप ताप सन्ताप नसाविय
बिनु कैने ने उपाय दुख दारिद्र हटाविय

जाय परी एक बेरि प्रभु हरब कतेक ओहि भीरसों
माँचब तँ धन लय फिरब मरब छुटब दुख पीड़सों ।

दोसर छप्पय

राम नाम कय चलल विप्रसभ सोच बिसारल ।
उतरि गोमती सतरि सिन्धुपुर मे पगु धारल ।
द्वारपालगण विकट रूप ब्राह्मणहि निहारी ।
लागु कहए सभ कहाँ रहय ई दीन भिखारी ।
पहुना भीर मतंग मे कोन धराने आयल ई॥
देखै श्री दुर्बल दशा की अभिलाषा कयल ई ।

चौपाइ

आबि गेलहु हम दीन भिखारी ।
सुनि दाता श्रीकृष्ण मुरारी ॥
सुनहु विप्र नहि होयत निवाह ।
हमरहिओं भिछु लय फिरि जाह ॥
आगां पवरी रहए कठोर ।
जकर नृपतिगण करथि निहोर ॥
ओहि ठाम विप्र पैर जनु घाली ।
देखितहि क्रोधित देत निकाली ॥
अहाँ एहि ठाम जं भलहु कृपाल ।
ओहो मोहि देखि हैत दयाल ॥
जे प्रभु गोमती पार उतारू ।
हीर भीर मे प्राण उबारू ॥

जकरा बल फाटल पथ विकट ।
सहए ब्यौंतइ पवरी निकट ॥
अहाँ प्रिय कोड़ आगां कहू जाय ।
पवरी कय हम लेब बुझाय ॥
आयसु पाय विप्र ओहि ठाम ।
जाय द्वार लग कयल विश्राम ॥
देखलन्हि तहाँ ठाढ़ दंड पानी ।
द्वारपाल पवरी कय खानी ॥
बिनु आयसु जे पैसे द्वार ।
तकरा पर कर दण्ड प्रहार ॥
से देखि विकल विप्र मन भेल ।
साहस कय फेरि आगां गेल ॥
द्वारपाल लग जाय पुकारू ।
राम नाम कहि शब्द उचारू ॥
सभ द्वारीगण चितवय लागु ।
सभ मिल आयल ब्राह्मण आगु ॥
सदय हृदय सँ लग बैसाओल ।
कयल जिज्ञास दया उपजाओल ॥
थिकहुं तँ हम एक भिक्षुक ब्राह्मण ।
नाम सुदामा दीन प्रसित तन ॥
मित्र थिका श्री पति महाराज ।
ऐलहुँ तनिकें दर्शन काज ॥

दोहा

सुनिय विप्र ई बैन पुनि, आपु ने मुखमे लाि
देवराजकेर दर्प नहि, मित्र कहौताह आबि

सोरठा

ताकय सभ एक टक्क, मित्र बचन सुनि विप्रकेर
जे ककरो नहि सक्क, से कुवैन सुनु विप्रमुख

चौपाइ

व्यास वृहस्पति नारद मुनि।
ककरो मुख ई बचन ने सुनी॥
अहाँ तोँ विप्र भिखारि कहावी।
मित्र बचन कहि लोक हसावी॥
सुनु सभ द्वारपाल सज्ञान।
हमरो किछु बचन दयकान॥
कमल बसय जल सूर्य अकाश।
जलज मित्र दिनकर काँव भास॥
चन्द्रक मित्र चकोर कहावे।
दोसर पर से मन नहि लावे॥
जोँ भिखारि हो राजाक मित्र।
नहि अचरज से नहि कोनो चित्र॥
करिय कृपा कय एतबा काज।
जाहि ठाम बैसल छथि महाराज॥

कहथ सुदामा विप्र भिखारि।
आबि द्वार पर दरथि पुकारि॥
ई सुनि द्वारपाल भेल हर्षित।
भीतर महलहि आय सभय चित॥
कर जोरि कहलनिह कंपितगात।
कहइत अचरज लगइछ बात॥
द्वार एक ब्राह्मण अछि भिक्षुक।
श्री सरकारक दर्शन——इच्छुक॥
दशा घटल सन बोलक जेठ।
कहय करब श्री कृष्णक भेंट॥
हमर चिकाइ से मित्र ईयार।
तेँ हम ऐलहुँ एहि दरबार॥
से वार्त्ता सरकार जनाबी।
करब जेहन आयसु केरि पाबी॥

दोहा

द्वारक रक्षा हेतु हम नियत रही नित द्वार।
वार्त्ता आगत शुभ अशुभ कहि जनाबि सरकार॥

सोरठा

ब्राह्मण महा भिखारि दीनक वस्त्र दुर्बल दशा।
मैत्री बचन पुकारि कहय से सुनि अचरज लगे॥

कवित्त

सुनैत सुदामा नाम छाड़ि देल और काम
तेजि कय महल धाम ठाढ़ घबराय कय।
रहि गेल पानो आधु पदत्रान सेहो त्यागि
वस्त्र ने सम्हारय आगु चले अगुताय कय।
ठाढ़ि रहु राजा रानि आश्चर्य हृदय मानि
प्रभु मित्रागम जानि गेला थहराय कय।
नयन नीर आबु ढरि चरण युगल धरि
मिलला अंग भरि सुदामा सों धाय कय।

चौपाइ

सजल नयन श्री कृष्ण कृपाल।
मित्र धार धरि रहु तेहि काल॥
से देखि ककरहु धैर्य ने रहल।
सभकाँ नीर नयन सों बहल॥
जोँ जादव समुझाबथि करुना।
तोँ दुख मित्र अधिक करु करुना॥
अमर कहथि सभ आबि विमान।
आब भिनु कहि रिझ भगवान॥
हमरहु सभ जोँ होइ भिखारी।
तखन अंक भरि मिलब मुरारी॥
एहन मिलब ककरहु नहि भेल।
देखल ने कवहु जनम बिति गेल॥

मिलइत देखने छी सुग्रीव।
मिलु जे विभिखन तेजि दसग्रीव॥
विदा होइत फेरि नन्दराय कय।
देखने छी मधुपुरी जाय कय॥
एहन प्रेमबस कतहु ने देखल।
कोन भल पुण्य विप्र ई टेकल॥
मिलला प्रभु जे एना कानि कय।
गुरुक समीपक बन्धु जानि कय॥
रे मन मूढ़ कृष्ण प्रभु छाड़ी।
के थिक तीन लोक मे बाढ़ी॥
भजु से चरण मन छल बल त्यागी।
रहय ने कोनो वस्तु केर खागी॥
चरण कमल चित्त भ्रमर समान।
प्रेम भक्ति रस करु मन पान॥
ये यहि पद काँ ध्यान लगाबथि।
बैसले सभ तीर्थक फल पाबथि॥
बिना भाग्य ओहि पदमे ध्यान।
होय ने कहु सभ शास्त्र पुराण॥

दोहा

उधव अक्रुरादि सभ कहु बुझाय अविसार।
तखन महा प्रभु धीर धरु छाड़ मित्र केर धार॥

सोरठा

वेनहि अपने हाथ गेल। भवन भीतर महल।
देखि विप्रकेर गात सकुचि गेलो रानी सकल ॥

चौपाइ

कह प्रभु हे रुकुमिन छल छाडी।
आउ नीर भरने भरि झाडी ॥
त्यागि संकोच लाज वैदेहारू।
शीघ्र मित्र केर पैर पखारू ॥
छथि बड़ बाटक थाकल मित्र।
चरण धोय करु हाथ पवित्र ॥
ई देखि मित्र कहथि डर मानी।
एतबा आदर करि की जानी ॥
ने हम पंडित गायक गुनी।
ने हम व्यास ने नारद मुनी ॥
कपिल दुर्वाशा ने मुनि गर्ग।
दीन सुदामा जानय सर्व ॥
कह प्रभु चिन्हलहु सकल प्रकार।
महामित्र गुरु बन्धु इआर ॥
सुनिय मित्र हम कहिय बुझाय।
आइ अहाँक चरण युग पाय ॥
जानिय सभसौं दरसन भेल।
वैकुण्ठादि भवन भेटि गेल ॥

नीर लेने छथि दासी ठाढ़ी।
चरन दिअ जे लेब पखारी ॥
सुनि श्री मुख प्रभु केर ई बचन।
सुयश भाखु देवगन पथ गगन ॥
सत्य भक्तवस श्री भगवान।
सुरनर मुनि कह वेद पुरान ॥
प्रभुता त्यागथि बालक हेतु।
जनिक नाम थिक भवान्धि सेतु ॥
महारानि रुकमिनि जगदम्बा।
परमेश्वरि संसारक अम्बा ॥
जन्हि चरण मुनि ध्यान लगाबथि।
शिव सनकादि अन्त नहि पाबथि ॥

दोहा

से जगदम्ब संकोच तेजि आबि सुदामा आगु।
निजकर कमल पुनीत सौं चरण पखारय लागु ॥

सोरठा

वैसाओल द्विज आनि, पद पखारि आसन ऊपर।
सन्मुख होय सभ रानि, बन्दु चरन आदर सहित।

चौपाइ

बीरा विप्र आगु देल आनी।
बीअनि कर डोलबथि महरानी ॥

नयनहि नीर प्रभुक कय वेरी।
भरि आवय पुछथि फेरि फेरी॥
कोन चूकि हमरा सँ भेल।
जे अहाँ मित्र बिसरि मोहि देल॥
प्रभुकाँ रानी सकल निहोरी।
पुछथि कय विनती कर जोरी॥
कत नृप अमर द्वारिपर आबथि।
सबय चरन केर दास कहाबथि॥
इन्द्रो चरण करथि उर धारन।
हिनका मित्रता थीक कोन कारन॥
नदी नर्मदा तीरक पास।
ग्राम अन्तिका पुरी प्रकाश॥
तहाँ बसु गुरु सन्दीपन मुनी।
विद्या हेतु गेलहुं से सुनी॥
बहुत शिष्य पढ़ शास्त्र पुरान।
सभमे ई मानुष परधान॥
हिनकहि बल विद्या बहु पढलहुँ।
दछिना सोधि गुरुक हम चललहुँ॥
एक दिवस गुरु आज्ञा पाय।
गेलहुँ महावन ईन्धन लाय॥
बर्षा परय लागु भरि दिन।
सभ बालक काँ मित्र प्रबीन॥

निज संग बड़ छाया तर राखु।
आहि त्राहि परमेश्वर भाखु॥
सभक बचौलन्हि मित्रे प्रान।
नहि तँ होइत आनक आन॥
छुटय ने बुन्द दरिस एक भाँती।
सुखले रह सभ ओहि दिनराती॥

दोहा

सोतय भवन मे श्री गुरु सोचैत रहु भरि रैन।
श्री गुरु बधू विलाप करू निन्द ने आयल नैन॥

सोरठा

करथि महा पछताव, बालक बनहि पठायके।
कोन उपाय हो आब, बरखा निसदिन बरिसु घन॥

चौपाइ

प्रात होइत सभहक सुधि लेल।
दयादृष्टि अतिशय मन भेल॥
आगि तपाय बस्त्र पहिराओल।
दय प्रसाद भोजन करबाओल॥
ताहि दिनक मित्रक उपकार।
से हमरा पर रहले भार॥
एह ने बसुदेव देवकी माय।
हिनका सन नहि हलधर भाय॥

एहन ने द्रमर यशोमति नन्द।
जेहन मित्र छथि आनन्द कन्द॥
जहिया स गुरु गृह सौं एलहुँ।
ई सभ सुधि बिसरियें गेलहुँ॥
मित्रहु ने कहियो सुधि लेल।
आइ आबिकय दर्शन देल॥
कुशल छेम आब कहू इयार।
सखा सहित निज कुल परिवार॥
हम की कुशल कहू हे स्वामी।
छी अपनहि सभ अन्तर यामी॥
बितेल दिवस जेना थिक गृहघर।
किछु नहि आछ अपनेक अगोचर॥
दर्शन भेने सभ दुख गेल।
सब पदार्थ फल मिलि मोहि गेल॥
नितहि ध्यान आहि चरणक करीय।
ततबय धारि अवलम्बन धरिय॥
और ने जानीय किछु वेवहार।
सन्त कहिय जानय संसार॥
विप्र वचन सुनि सारंग पानी।
कह प्रभु सुनिय सुमुखि सभ रानी॥
मित्र सदा छथि सरल स्वभावी।
हिनक चरित्र कहुँथ की गाथी॥

दोहा

कहल कहीं धरि सुन्दरी! मित्रक जे उपकार।
भेल दच्छिना सं गुरुक, हिनकहि बल उद्धार॥

सोरठा

बहुत दिवस बितगेल, बिसरि गेलहु से सुधि सकल।
दरश मित्र सं भेल, मनपरि आयल सभ कथा॥

चौपाइ

मनिमय महल द्वारका भारी।
चित्रित जगमग अति दुतकारी॥
भवन विराजित महरानीगन।
अभरन बसन सोहाग भरल तन॥
जहं छथि अपन कृष्ण मुरारी।
रहु छथि बैसल विप्र भिखारी॥
कहियो ने देखु भितर नृप महल।
कहियो ने एहन टेक उर गहल॥
देखि विप्र मन अचरज लागु।
लज्जित रह सभ रानिक आगु॥
आइन सभा मध्य लाजक लेल।
फबही तुरूबैत परलथ भेल॥
वस्त्रहीन निज दीनहि काँख।
धारबीच कय टक टक ताकू।

कहथि मनहि मन करथि विचार ।
कयलि नारि जे किछु उपचार ॥
सकल मिलल उपदेश जे देल ।
ई सन्देश कठिन सँह भेल ॥
एहि चित्तभूल मे रहथि सुदामा ।
नाथ सँ हास्य करथि किछु बामा ॥
हे प्रभु नहि अहाँक ठेकान ।
तेँ व्रजवधूक छोड़ाओल मान ॥
रासल रचल वृन्दावन जाय ।
खायल माखन दही चोराय ॥
नाचि नाचि व्रजवधू रिझाओल ।
व्रजमंडल मे धूम मचाओल ॥
कुबरी नारि स्वामि के पौलक ।
दरजी माली मीत कहौलक ॥
निर्मल मित्र दीन सभ भाँति ।
तेँ देखि अधिक जुड़ावी छाती ॥

दोहा

विलखि कहल प्रभु मुदित मन सतभामा दिस ताकि ।
तेँ अहाँ कय कहु द्रौपदी नटी भाव अभिलाषि ॥

सोरठा

नट हमरो जँ स्वामि, तँ हम किएक ने हैब नटी ।
से सुनि अन्तरयामि, हसि चुप रहला मुख निरखी ॥

चौपाइ

तखन कहल प्रभु द्विज दिस देखी ।
सखीक कुशल क्षेम कहिय विसेखी ॥
कुशल पुछि फेर कह बिलखाय ।
कि सन्देश देल हमरा लाय ॥
कोन सन्देश मित्र हम लाएब ।
किछु न उपाय कहाँ की पायब
घर नहि बरए तेल बिनु दीर ।
धनिकोंने कियो बस घर समीप ॥
भेंटबो नहि कर रीन उधार ।
सन्देशक नहि बाट प्रकार ॥
कह प्रभु चतुर भेलहु अहाँ आव ।
पूर्व बहुत छल सोझ स्वभाव ॥
सखिक संग मिल भेलहु चातुर ।
हम छी बहुत सन्देशक आतुर ॥
क्षेम करिय हमरो अपराध ।
देवा मध्य कछ जनु बाध ॥
पोटरी रह द्विज काँख नुकाओल ।
तहाँ धरि प्रभु निज हाथ चलाओल ॥
हाँ हाँ विप्र करैत रहि गेल ।
हाथ पकड़ि पोटरी छिन लेल ॥
तखन विप्रकद बड़भेल लाज ।
कहथि मनहि मन भेल अकाज ॥

एक त कुधुधन हमर नारी ।
दोसर हमरं ने लेल विचारि ॥
तेसर ओहूँ ने कयल विचार ।
एकहि फेर कय देल उधार ॥
सुनि मित्र जनु मानिय आन ।
ई मोदक सँ थिक दुइ गुन ।

दोहा

ई कहि नाथ सप्रेम सँ निजकर पोटरी खोलु ।
देखल फरही छवक अछि दुइतीन मुठी अमोल ॥

सोरठा

हा हा कहि मुखभाखि ई नहि खायल जन्म भरि ।
सिरधरि करमे राखि लागु प्रशंसा करय विधि ॥

चौपाइ

एहन वस्तु खायल नहि कहिओ ।
यशोमति भवन गेलहु जहिओ ॥
जे ने खोआओलन्हि देवकी माय ।
सुमुखि सखी से देल पठाय ॥
मधु मेवा माखन सौं नीक ।
हमरा लग ई फरही थीक ॥
ई कहि कृष्ण मित्र दिश ताकी ।
फुरही एक मुठी लेल फाकी ॥

जखन चना प्रभु मुखमे देल ।
से देखि विप्रक जी बहि गेल ॥
जँ एक दाना कंठहि गड़त ।
तँ थलोक हमरहि सिर पड़त ॥
देखि प्रभु ब्राह्मण चित्त उदास ।
कहैत गेलाह प्रफुलित मुख हास ॥
नन्द भवन हम खायल माँटी ।
तँ यशुमति ठाठि मारल साटी ॥
गिरइत मुखमे किछु नहि भेल ।
दावानलहु पान कय लेल ॥
से कहि खयलन्हि कहि स्वादिष्ट ।
आओरो पर फेरि लयलाह दृष्टि ॥
सोसरो मुठी लेल निज पाणी ।
खयलन्हि बहुतो स्वाद बखानी ॥
तेसर मुठी पर हाथ चलाओल ।
बारन कय रुक्मिनि समुझाओल ॥
तीन लोक जँ हिनकहि देब ।
अपने वास कतय भय लेब ॥
तखन महाप्रभु बारल हाथ ।
रुक्मिनि सँ हँसि कह ई बात ॥
कोन अचरज एहि फरही लागि ।
होथि जँ मित्र तिहुपुर भागी ॥

जे किछु फटही रहि गेल सेस।
से प्रसाद लय लेलन्हि प्रत्येक ॥
नधिन वस्त्र मित्रहि पहिराओल।
खटरस मधुर भोजन करवाओल ॥
भोजनोत्तर निसि पलंग सुताय।
निजकर मानिय चरन । दबाय ॥

दोहा

सुतला बिप्र अचेत होय लोको सभ ओहि राति
रहु सभ महरानी भवन योगनिन्द सों भाँति

सोरठा

अपने श्री भगवान गेल सयन पर बैठु उठी
बिश्वकर्मा कर ध्यान करलहि प्रगटु से आबि कें।

चौपाइ

आयसु पाय शीघ्रसे जाय।
पुरी सुदामा रचल बनाय ॥
कोठा सोफा महल अटारी।
चित्रित चित्र भवन सुखकारी ॥
हय गज शाला हाथी घोड़।
भय गेल ठाम ठाम कय जोड़ ॥
नोकर चाकर भरल दुआर।
धन विरा सम्पत्ति भेल अपार ॥

कोना भेल से कयो नहि जान।
पूर्वहिसों अछि सेहे कय मान ॥
प्रभु लीला गति अगम अगाध।
पाबय पार ककर थिक साध ॥
सुकिय निन्द पहु होय अज्ञान।
सम्पत्ति कोना भेल नहि जान ॥
वसन भूषण अंगहि पड़ि गेल।
गुदरी वस्त्र कतहु उड़ि गेल ॥
खोपड़ी भए गेल अन्तर ध्यान।
रहल ने तकरो चिन्ह निशान ॥
तखन महाप्रभु दीन दयाल।
साखि लगा प्रगटि गेला तत्काल ॥

दोहा

भवन प्रकाशित भे हरखि सिरमा बैसलाइ जाय।
सखी सखी उच्चार मुख मुरली मधुर बजाय ॥

सोरठा

सुनितहि बंशीक टेर कह सखी उठलि चेहायकय।
के पुकारु एहि बेर निशा राति सुतला समय ॥

छन्द

चौंकि कय उठलि बाम देखल धवल धाम,
चित्र चित्रकारी काम कौन बिधाता ई देल।

झोपड़ी टुटल छल से बिलाय गेल चल,
े पहुन कयल भल कहरा ई दया भेल।
भूषण सगर अंग वसन भरल रंग,
देखि मन भेल दंग गुदरी कहाँ दों गेल।
स्वर्ग की स्वप्न में छी की आन भवन में छी,
सुनने श्रवण में छी सखी नामके दों लेल।

चौपाई

ई कहि नाकल सिरमा दिस।
देखलन्हि बैसल श्री जगदीश॥
माथ मुकुट मोरक पाँखि।
एहन कतहु देखल नहि आँखि॥
केस सघन लटल घुघरारी।
जकरा सन दोसर नहि कारी॥
भाल सोहित चानन केर रेख।
चित्त नहि थिर रह जेकेओ देख॥
भृकुटि बंक देखि धनुष लजाथी।
दुतियाक चन्दा देखि पराथी॥
देखि रूपवर नयन निकाय।
खंजन मीनक प्राण सुखाय॥
नासा देखि सुगा रहु दूरी।
लोल उठाय ने ताकय धूरी॥

देखितहि भ्रमर अरुणता ठोर।
धनमे हुटले रह तिलकोर॥
मकराकृत कुण्डल दुहु कान।
मरकत जेहन उगल छवि भान॥
कंठ कनक — कंठा दुतिकारी।
ब मय बलिहारी बलिहारी॥
मुक्ता मणि बनमाल बिराजय।
उर बिशाल पर अति छवि छाजय॥
उदर उदार रोमावलि रेख।
डोलितहि रह जे पल भरि देख॥
कटि देखि सिंह रहथि नहि ठाढ़।
वनहि पराथि नीच कय चाढ़॥
किंकिनि धुनि जन्धादि लजावय।
मानिय हंसक बच्चा बाजय॥
जानु जंघ केर गति विपरीतो।
केराक थम्ह पग चलटल रीतो॥
युगल चरन दुति कमलक रंग।
जांहि सँ प्रगट भेली श्रीगंग॥
सभ अङ्ग छवि उपमा के कहय।
जे देखय से देखितहि रहय॥
एहन महाप्रभु त्रिभुवन नाथ।
बैसल छथि सखि सिरमा कात॥

चुप्पहि रह मुह किछु नहि भाखु ।
लखन सुकी खिरमा हिश ताकु ॥
चरन परखि सिर लगली कानय ।
कहि कहि अहँक चरित्र के जानय ॥
धन्य धन्य प्रभु अन्तरयामी ।
सभक उपर परमेश्वर स्वामी ॥
क्यो नहि पावय अपनेक अन्त ।
अपने थिकहुँ एक भगवन्त ॥
मत्यंभुवन लय स्वर्ग पताल ।
सकल अहाँक थिक माया जाल ॥
सभ घट अपनहि वास करैछी ।
उत्पत्ति पालन नाश करैछी ॥
जखन जखन होअ धर्मक हानी ।
अंशकला अवतार धरैछी ॥
दुष्ट निशाचर दैत्य आदि जत ।
हति हति पृथ्वी—भार हरैछी ॥
भय सहाय सरनागत जन पर ।
भव बन्धन सँ पार करैछी ॥
कत पापी तापी आपी खल ।
नाम—प्रताप उधार करैछी ॥
भक्तक सकल दुराय दीन दुख ।
सुखद करोड़ हजार करैछी ॥

कय प्रमान युग वर्ष रात्रिदिन ।
कीति सृष्टि संसार करैछी ॥
माया सकल भेटाय अन्त मे ।
प्रलय काल अन्हार करैछी ॥

दोहा

बहु विधि स्तुति कयल सुकी प्रभुक चरन धयि माथ ।
लखन सखी सम्बोधि कय कहैत भेलाह ब्रजनाथ ।

सोरठा

कठिन प्रेम केर पंथ जहाँनेम केर मार्ग नहि ।
कहथि सकल सद्ग्रन्थ जहाँ प्रेम तहँ नेम नहि ॥

चौपाइ

जे जन जेहि विधि ध्यान लगाबय ।
ताही विधि हमरा से पावय ।
फल दी सभको समुझि जथारथ ।
हमरहि कर अछि चारि पदारथ ॥
चित्त अहाँक त्रिस पर भेल ।
तेँ हम एतेक सम्पदा देल ॥
प्रेम अचल कय ध्यान लगाओल ।
तकरै फल—बल हमरा पाओल ॥
भक्ताधीन वेद यश गावय ।
आदि अन्त गति क्यो नहि पावय ॥

जदपि भक्त अछि विविध प्रकार ।
प्रेम भक्ति सभहक थिक सार ॥
सखो जन्म भरि सुख करैत रहू ।
हमर चरण वर ध्यान धरैत रहू ॥
मित्र संग कर भोग विलास ।
अन्त होएत वैकुण्ठक वास ॥
आइन छी आब अपना धाम ।
बिसरि जाइ जनि हम्मर नाम ॥
मित्तहि किछु नहि देल ने देब ।
से अपराध छमा कय देब ॥
एतबा कहैत मात्र भगवान ।
भेला तहाँ सँ अन्तर्ध्यान ॥
छन मे द्वारावति प्रभु जाय ।
सयन भवन सुतला अलसाय ॥
ई चरित्र सभ कँओ नहि जान ।
भरि निशि प्रभुकाँ सुतले भान ॥
सुतले रह द्विज निसि निन्दमाती ।
जानथि नहि किछु जे गेल राती ॥
प्रात ठाढ़ द्विज मुँह हाथ धोय ।
कयल विनय प्रभुसँ मुँह होय ॥
आब दिवस तीन भेल गोसाइ ।
आयसु होय भवन निज जाइ ॥

लहु मुदित लखि संपति स्वार्थ ।
चरन देखि मन भेल कृतार्थ ॥
से सुनि कह प्रभु धन्य भेलहु हम ।
मित्रहि देखि आनन्द भेलहु मन ॥
जँ एतहि अपने रहि जायब ।
तों हम नित्य दरस सुख पायब ॥
तखन विप्र कह दुहु कर जोरी ।
हे प्रभु विनय करिय कर जोरी ॥
आज्ञा होअ भवन जयवाक ।
आब बनल भेल घर अयवाक ॥
कुशल छेम दुहु दिस जँ रहत ।
दरस परस फेरि होएबे करत ॥
दया दृष्टि प्रभु होय ने घाटी ।
ई कहि लेल कमण्डल काठी ॥
प्रभु उठि चललाह विप्रक साथ ।
बाहर आय देलन्हि अरिआत ॥
अंकम लय लेलन्हि पद धुरी ।
चलला विप्र ताकु नहि धुरी ॥
मित्र विदा कय श्री यदुराय ।
वैसला सिंघासन पर जाय ॥
एतय विप्र चेलन्हि गृहि बाट ।
सुमिरैत प्रभुगुन छाति फाट ॥

कृष्ण महाराजा छथि भारी।
देखल संभड़ा महल अटारी॥
खयबा—पीबाक बड़ सनमान।
कयलन्हि रखलन्हि सभ विधिमान॥
देलन्हि ने किछु मोढ़ि चलइक बेरी।
आब ने द्वारका आयब फेरी॥
पाओल भल फल भेंट इयारक।
सत संघति छन्हि पहिने ब्यारक।
तेँ हमरा किछु हृदय ने देल।
अहिरक गति बदलल नहि गेल॥
एतबड़ कहबै छथि महराज।
सांभ भेजा तकरो नहि लाज॥
केलन्हि आदर मानक ढेरी।
किछु नहि जुड़लन्हि हमरा बेरी।
छथि महराज किया कब छोट।
की मन धयल मड़बा गोट॥
बहुत प्रशंसा केलन्हि नारी।
लहतहि हुनकौ पारब गारी॥
बाट चलैत मखथि भरिपोख।
प्रभुक उपर सभ लगबथि दोष॥
अन्तरयामी कृष्ण सदाशिव।
जल थल नभ तीनू लोकक पिव॥

फलछित विप्रक सभ सुधि लेथि।
छुअलन्हि विप्र शाप जौं देथि॥
चलल अथि पथ घुरि नहिताकू।
पथ घेरलन्हि प्रभु अनिकय डाकू।
धय झाड़नहि मचौलन्हि रगड़ा।
मारयो कयलन्हि एक दुइ बजड़ा॥
कहलन्हि विप्र सूर्य छथि साखी।
किछु नहि संग लिअ से ताकी॥
लखन विप्र पर होए दयाल।
प्राणदान देलक चण्डाल॥
कहय लागु द्विज शालक लेल।
भल भेल हरि मोंढ़ि किछु नहि देल॥
लेबे करैत सकल छिनि डाकू।
प्राण बाँचि गेल की आब माछू॥
ब्राह्मण जानि छाड़ि से देलक।
सङ नहि छल किछु तेँ नहि लेलक॥
वृथा कृष्ण पर दोष लगाओल।
कर्मक लिखल अपन फल पाओल॥
जे अछि लिखल दरिद्री ताप।
मेटि नहि सकथि विधाताक थाप॥
एतबा कहि धयलन्हि फेरि पंथ।
सुमिरन करैत ध्यान भगवन्त॥

दोहा

जाय उपस्थित भेलाह द्विज द्राविर अपना देश।
धाकल मन झांखल जकाँ धैने एवंक भेष॥

सोरठा

गामक बहरीं आबि कयल नगर विश्राम किछु।
तदवर किछु सुस्ताबि चलला नगर प्रवेश हित॥

चौपाइ

परकहि सों द्विज आँखि पसारी।
कोठा सोंका देखलन्हि भारी॥
महल अटारी धवल धाम सभ।
सोन रूपमय जड़ल काम सभ॥
बाजे घंटा घड़ी निशान।
ढोलडाक बजइछ घमसान॥
नौबति बाज सिंह दरबाज।
नर्त्तक नृत्य करय धय मान॥
गज चिक्कार घोर हिहिआय।
लोकक बोल सुनल नहि जाय॥
हाट बजार लागु कय ठाम।
दोसर जेना द्वारका धाम॥
देखि विप्रकाँ लागु अचंभा।
ई की भेल सारदा अम्बा॥

से कोन ठाम जे पथ भोतिऔलहुँ।
फेर द्वारका की चल अएलहुँ॥
नहि नहि एतेक सोच धिक धीक।
असल गाम अपन ई ठीक॥
अनुमानहुँ सँ बूझि पड़ै अछि।
ठानि बानि सँ सूझि पड़ै अछि॥
के नृप वास लेल ई कहिआ।
छल नहि किछु हम रहलहुँ जहिआ॥
टुटलो घरकें देलक उजारी।
जहाँ उठौलक महल अटारी॥
ककर पहुन भेल शीघ्र प्रताप।
नारि कतय गेल आहिरौ बाप॥
ई दुख आब कहब हम ककरा।
मित्र मिलन विपदा भेल हमरा॥
के एहि औसर हयत सहाय।
देवता कोन मनायब जाय।
औढ़रदानी शिव बम भोला।
से रह मगन खाय भंग गोला॥
इन्द्रहि आय कहब की भाखी।
हुनकहु छैन्हि हजारेक आँखी॥
चन्द्र सूर्य कैं कहब कि ऊठी।
चलवा सँ हुनकहु ने छुट्टी॥

विधि सों कहब कि बार्त्ता गूढ़ ।
ओहो आब भय गेल छथि बूढ़ ॥
सुनि जन रहथि ध्यान रस मगन ।
कोन उपकार करथि से तखन ॥
आब फेरि द्वारावति घुरि जायब ।
जेहन बनल से ओतहि बनायब ।
येह गुन धुनि मे रहथि सुदामा ।
देखलि अटारि ऊपरसँ बामा ॥
द्वारपालगन आयहु पाय ।
घेरलन्हि बरइ लगमे जाय ।
हाथ जोड़ि बिनती सों कहल ।
चलल होय प्रभु अपना महल ॥
सकल सम्पदा जे किछु देखिय ।
अपनेक थिक दोसरक जनु लेखिय ॥
केओ लेल तुमा केओ लेल झोरी ।
कान्ह चढाय के लगुनी डोरी ॥
तखन विप्र कहलन्हि रिसिआय ।
कयल ने हम किछु नर्पहि जाय ॥
ककरहु सों नहि कयल विवाद ।
कयने नहि छी किछु अपराध ॥
पकरिय धुरिय अन्हेरि कि हेतु ।
राजालग की होयत से चेतु ॥

लखन सुकी लय संग सहेली ।
स्वामि समीप पहुँचिय गेली ॥
बसन भुखन सभ अंगहि सोहित ।
देखि सुदामा मन भेल मोहित ॥
गहिकर स्वामि चरन छुरि लेल ।
बदन निहारि हरखि हँसि देल ॥
हमहि पठाओल कृष्णक पास ।
तकर उचित फल भेल प्रकाश ॥
विपति दूरि गेल सम्पति भेल ।
अ नहि आबि सकल पभु देल ॥
महल भवन लक्ष्मी लेल बास ।
भेल अहाँक केर पुरा प्रकाश ॥
मणि मुक्ता इत्यादि अनाज ।
हय गजादि बहु भृत्य समाज ॥
सभ संयुक्त पुरी गेल जागी ।
रहल ने कोनहु वस्तु केर खागी ॥
पहिर ओढि मंगलमय साजू ।
सिंघासन पर जाय बिराजू ॥
पूर्व भेख वस्तर सन त्यागू ।
जाय भवन राजा सन लागू ॥
सुनि प्रिय बचन चीन्हि निज नारी ।
कहय लागु प्रभुय गुन मन धारी ॥

छन्द

देखि कय अहाँक सुख भेल जे परम सुख
गेल आब सभ दुख दारिद्र परायकय
अहाँक ऊपर जाया प्रभुकें भेलन्हि द।
देलन्हि एतेक माया प्रेम भक्ति पायकय
अहाँक मानस भावि विश्वकर्मा कय पठावि
अपनहु गेला भावि राता रानी धायकय
हमरा भेटैटा भेल अचैन ने किछु देल
प्राण गोटा बाँधि गेल मध्य पंथ आयकय।

चौपाइ

जे गति भेल द्वारका आय।
निश्चित भय से कहथ बुझाय॥
एतबा कहैत नारि सुख वाकी।
हर्ष नोर भरि आयल आँखी॥
कहैत भेलाह ई सभ जे भेल।
हमरा नहि प्रभु जानय देल॥
जे चाहथि से करथि ईयार।
तकरा के अछि मेटनिहार॥

दोहा

निज इच्छा सँ करथि प्रभु सकल कार्य वेवहार।
शेष महेश गणेश विधि क्यो नहि पावथि पार॥

चौपाइ

जब भेल द्विज आगम गइ।
देखथ दौड़ल मौगी मइ॥
सकल वस्तु आयल ओहिठाम।
पूर्ति भेल सभहक मन काम॥
तखन सुदामा कय असनान।
लोचल विप्र दुखी दग दान॥
गोविन्द मित्र सुदामा भागी।
पूर्वक भेख वस्त्र देल त्यागी॥
पहिरि छोड़ि राजाकेर साज।
सिंहासन पर जाय विराज॥
भूप भूप कहि भय गेल सोर।
लोक एकट्ठा भेल ने थोर॥
बाजय बाजा ढोल निशान।
से सुनि देल जाय नहि कान॥
कयल प्रवेश सुदामा धाम।
पूर्ति भेल सभ विधि मनकाम॥
एहि विधि हर्ष युक्त सुख चैन।
बितय लागु दिवस पछ रैन॥
श्री हरि मन्दिर परम प्रकाश।
स्वर्ण रूप भय लागु अकाश॥
श्री युत राधा कृष्ण प्रवीण।

राजित भ्राजित अति उतीम ।
के कहि सक मन्दिर परताप ।
देखतहि नाश होय सभ पाप ॥
भजन गान गुण गण हरि ध्यान ।
नित होय मंगल दान प्रदान ॥
छप्पन विधि लागय नित भोग ।
से प्रसाद पावय सभलोग ॥
सकल काम प्रद धाम प्रकाशित ।
दोसर द्वारावति होय भासित ॥
द्वारवती प्रभा द्युति पाओल ।
श्री बिश्वकर्मा जाहि बनाओल ॥
श्री शिव मन्दिरादि कयठाम ।
बनि गेल अछि सभ देवक धाम ॥
चहु दिश बापी कूप तड़ाग ।
सड़क बान्ह रम्यक बनबाग ॥
जकरा देखने भ्रमता आय ।
छिनता छिनता सकल पराय ॥
के कह शोभा धाम अगारक ।
भरल जहाँ अछि सुख संसारक ॥
मानहु रिद्धि सिद्धि लेल बास ।
लछमी अपनहि करथि निवास ॥

छप्पय

नित पूजा जप ज्ञान ध्यानमे सुखी सुदामा ।
रहथि करथि सद धर्म भोग सुख संपति धामा ॥
श्री राधागोविन्द कमल पद उरमे राखथि ।
छन छन निस दिन कृष्ण चरित गुणगण मुख भाखथि ॥
श्री मद्भागवत आदिनित कहथि कहावथि नेमसोँ ।
श्री गोविन्द लीला सकल सुनथि सुनावथि प्रेम सोँ ॥

छप्पय

नितकर भक्ति विशेक प्रभुहि असनान करावथि ।
धूप माल बनमाल तुलसिदल मलय चढ़ावथि ॥
नित छप्पन परकार मोद प्रभु भोग लगावथि ।
दान मान सोँ दीन दुखः जाचकहि जुड़ावथि ॥
नूतन मंगल होय नित सदावर्त पक द्वार मे ।
चरित सुदामा विदित अछि आबहुधरि संसार मे ॥

चौपाइ

चरित सुदा कृष्ण विलास ।
कहल लिखल हरिनन्दन दास ॥
विष्णुपदहि भाखा हम कयल ।
तेँ सबहक सरनापन्न भयल ॥
अज्ञ जानि छेमब से दोष ।
करजोरि विनय करिअ भरिपोख ॥

श्री गोविन्द पुरोता आस।
इनके छन्हि सभ घट-घट वास॥

दोहा

बिनु कहने सुनने प्रभुक गुणगण कथा सप्रीति।
भक्ति ने होय ने तरिय भव, कहथि शास्त्र अरु नीति॥

"समाप्त"

— ॰ —

श्री शिवजीक

गंगाधर हर शूलधर शशिधर शंकर बाम ।
सर्वेश्वर भव शंभु शिव रुद्रकाम रिपुनाम ।
शूलीत्र्यम्बक त्रिपुर अरि ईश उमापति होय ।
जटिल पिनाकी पशुपति नीलकंठ शिव सोय ।

भजन

ध्यान मगन छथि नगन महादेव जागल रहल दिन थोर
नारद घटकक खोज ने पाविय शिवगति कठिन कठोर ।
जौं मन छैन्हि विवाह करै केर भेजथु उदासी ध्यान
नहि तौं सुध हमर जनु टारथु करथ गौरि बर आन
सुनिअन्हि हुनका घर आंगन नहि नहि ऐखो माए ने बाप
रूण्ड मुण्ड केर माला कर नहि सबत करै छथि जाप
भांग धतूर अहार कराथ नित पिबथि जटा सँ गंग
परिधन वसन एको नहि सुनिअन्हि भसम लगाबथि अंग
चन्द्र भाल सिर जटा ताहिपर छत्र बासुकी नाग
अग्नि धुनी लग बसहा एक दिस एकदिस बैसल बाघ
एहना ठाम धिया कोना गमौतीह करतीह कोन उपाए
कन्या लय हम कतहु पराएब के करत एहन जमाए
नारद घटक चटक भइ आनथि जौं मौना एहि टोल
गंजन जतेक करब हम हुनकर सुनत लोक से बोल

नन्ददास कह सुनिय मनाइन शिवहि सकल जग जान।
गौरीक नाह विधाता लिखलन्हि हर ईश्वर भगवान॥

२

आगे माइ आब कोन करब उपाए।
सात आठ नौ बरख बिति गेल सुद्ध बितल चल जाए॥
ककरा हाथ समाद पठाएब के जायत कैलास।
के कहि सुनि कै ध्यान छोड़ाओत दिगम्बर कृतिवास॥
इन्द्र कुबेर विष्णु ब्रह्मादिक ई सभ देवता छाड़ि।
हमरहि कन्याक भाल लिखल छल तपसी नाह भिखारि॥
स्वामी हमर ने शुद्ध आतमा नहि जानथि छौ पाँच।
झूठ फूसि जे नारद कहलन्हि से सभ बुझलन्हि साँच॥
जे एहि बर सँ ब्याह करौलाह सन्हिक देखब हम दर्प।
जकरा किछु नहि विभव वस्त्र धरि लपटल देहमे सर्प॥
जौं भल चाहथि स्वामि हमरौ नारद बचन देथु टारि।
कथा करथु अनतै दोसर घर कहि दै छी परचारि॥
नहि तौं गइ आंगन संपति निज कए लेथु ठोकि बजाए।
नैहर कन्या सहित पराएब घरमे आगि लगाए॥
एहन जमाए दोसर नहि पाओत बुझि पड़त पसचात।
हम कैलास जाइछी एहिखन घर लय आबिय वर्न।
कन्यादान निवेरि मुदित मन करिय मनोरथ पूर्ण॥

नन्ददास कह सुनिय मनाइन कहत सदा श्रुति चारि।
कन्या आदि भवानी दुर्गा वर ईश्वर त्रिपुरारि॥

३

मंगल माधव नाम उचार।
मंगल बदन कमल कर मंगल मंगल जनक सदा संसार॥
देखैत मंगल पुजैत मंगल गावथि मंगल चरित उदार।
मंगल सुवन कथा रस मंगल मंगल तन बसुदेव कुमार॥
गोकुल मंगल मधुवन मंगल मंगल रुचि वृन्दावन चन्द।
मंगल करण गोवर्धनधारी मंगल भेष यसोमति नन्द॥
मंगल धेनु रेणु भुव मंगल मंगल मधुर बजावथि बेणु।
मंगल गोपवधू परिरंभन मंगल कालिन्दिक धेनु॥
मंगल चरण कमल मणि मंगल कीरति जगत निवास।
अनुदिन मंगल ध्यान धरत मुनि मंगल मति परमानन्ददास॥

महेशवानी

नारद घटक घटक जो आनल शंकर सहित समाज।
...मद्दा पिठि आएड महादेव ने हर छैन्हि नहि लाज
...न्दी भैरो भूत प्रेत गन केओ बिनु सिर बिनु हाथ
...का नंगड़ा गूंगा खारा रौह सब थिक बरिआत
...र, कर डमरू त्रिशूल जटा सिर छत्र बासुकी मौर
...रिधन अंग भुजंग बसन भानु रौह पुनि डांकक और
डमरू बाजा बाजए डिमि डिमि करू बरिआती घोल
...रिछय चलली जखन मनाइनि भयगेल गंडम गोल

डाला लावा देखि वासुकी चुनि चुनि लगलाह खाए,
लवकथ सहित मनाइनि गाइनि विचित्र चलली पराए
नारद सबहि समोधल विधिवत परिछल सखन जमाव
दुर्गा शिवक विवाह कथा जे गाओत करत बखान
नन्ददास कह तन्हिक मनोरथ पुरवहि श्री भगवान

श्री जगदम्बापुकार

जय जय जय जगदम्ब अम्ब हम छी शरणागत।
आशा अछि जे आइ हमर सभटा दुख भागत।
बलबुद्धि विद्या विभवहीन हम छी जगदम्बे।
एहन समय मे एकमात्र अहाँ छी अवलम्बे।
वत्स पाबि न रहहि कैओ दीन दुष्ट जन घालिके।
दीनदास निज जानि माँ आश पूर्ण करु कालिके ॥१॥

मधुकैटभ सँ त्रसित पितामह केर दुखटारल।
जकरा श्री भगवान मल्ल रण मे ध्रुव मारल।
अहिक कृपा सँ भेल कार्य ब्रह्मा सुख पावल।
आरत दुख शरणार्थं कतहु नहि देरि लगावल।
आदि शक्ति जगतारणी निज जन सुत सम पालिके।
दीनदास निज जानि माँ आश पूर्ण कालिके ॥

महिषासुर एकभेल देवगण कें दुख देलक।
और कथा की कहू छीनि इन्द्रासन लेलक।
पूजा, जप, तप, होम मही सँ हीन करौलक।
कलेशित सुरगण देखि यद मे ताहि हरौलक।

महिष हति ताहि माँ सुर दुख दब हारि मालिके।
दीन दास निज जानि माँ आश पूर्ण करु कालिके ॥३॥

शुम्भ-निशुम्भासुर असीम बलशाली भेल जब।
स्वर्ग मर्त्य पाताल विदित छल करि अबला सब।
रक्त बीज सम वीर्यवान सेनप छल जकरा।
कुम्भ – निकुम्भादिक बलिष्ठ सेनापति तकरा।
सुर हित मारल सबहि कें गिरि पर माँ हिरमालिके।
दीन दास निज जानि माँ आश पूर्ण करु कालिके ॥४॥

भीष्मक गृहि रुक्मिणि नाम सँ जन्म लेल अहँ।
मान घटाओल जरासन्ध शिशुपाल रुक्म कहँ।
कृष्ण प्रिया भए मातु द्वारका मे आइ पैसहुँ।
पुर परिजन कँ अहाँ.................सुख देलहुँ।
जय जय जय हरिभामिनि मकरध्वज प्रतिपालिके।
दीन दास निज जानि माँ आश पूर्ण करु कालिके ॥५॥

—।—